

भारतीय ज्ञान परंपरा के विशेष संदर्भ में वरिष्ठ नागरिकों की भूमिका

¹ रमा निगम, ² डॉ. मनीष मिश्रा

¹ शोधार्थी, ² शोध निर्देशक

कला, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग स्कूल ऑफ आर्ट्स, ह्यूमैनिटीज एंड
सोशल साइंसेज सैम ग्लोबल यूनिवर्सिटी, रायसेन रोड, भोपाल

सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा में वरिष्ठ नागरिकों को समाज का अनुभव-संपन्न, मार्गदर्शक तथा समाज का एक महत्वपूर्ण और विशिष्ट अंग माना गया है। हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति में वृद्धजनों को केवल परिवार का सदस्य ही नहीं माना जाता था, बल्कि उन्हें ज्ञान, नैतिकता, संस्कृति और आध्यात्मिक मूल्यों के संवाहक के रूप में भी मान-सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त थी।

वर्तमान समय में वैश्वीकरण के कारण संपूर्ण विश्व एक वैश्विक गाँव में परिवर्तित हो गया है। वरिष्ठ नागरिकों की भूमिका में परिवर्तन का यह भी एक महत्वपूर्ण कारण है। इसके अतिरिक्त, तेजी से बढ़ता हुआ नगरीकरण भी वरिष्ठ नागरिकों की भूमिका में आने वाले परिवर्तनों के लिए उत्तरदायी है।

भारतीय ज्ञान परंपरा के विशेष संदर्भ में वरिष्ठ नागरिकों के विषय में एक ल परिवार व्यवस्था की चर्चा अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है। एक ल परिवारों का बढ़ता प्रचलन वरिष्ठ नागरिकों की भूमिका में परिवर्तन का एक प्रमुख कारण है। इसके बावजूद, भारतीय ज्ञान परंपरा पूर्व की भाँति आज भी उनके अनुभव, ज्ञान और जीवन-दृष्टि को महत्वपूर्ण मानती है।

यह शोध-पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में वरिष्ठ नागरिकों की सामाजिक, सांस्कृतिक,

आध्यात्मिक एवं नैतिक भूमिका का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

बीज शब्द

भारतीय ज्ञान परंपरा, वरिष्ठ नागरिक, वृद्धावस्था, सामाजिक मूल्य, संस्कृति, पारिवारिक व्यवस्था, आध्यात्मिकता, अनुभव, नैतिक शिक्षा, जीवन-दर्शन एवं सांस्कृतिक मूल्य।

प्रस्तावना

“मातृ देवो भवः, पितृ देवो भवः” की भावना भारतीय संस्कृति में सदैव विद्यमान रही है। वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत तथा अन्य प्रमुख भारतीय ग्रंथों में वृद्धजनों के सम्मान और उनके अनुभवजन्य ज्ञान को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। वरिष्ठ नागरिक सदैव घर, परिवार और समाज के लिए प्रेरणा, मार्गदर्शन तथा नैतिक चेतना के स्रोत रहे हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा व्यक्ति के जीवन को चार आश्रमों में विभाजित करती है—ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम और संन्यास आश्रम। इनमें वृद्धावस्था को मनुष्य के जीवन में आत्मचिंतन, समाज-सेवा और ज्ञान-वितरण का महत्वपूर्ण कालखंड माना

गया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का स्वरूप

भारतीय ज्ञान परंपरा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं है। यह पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक ज्ञान को भी अपने साथ लेकर आगे बढ़ती है, क्योंकि यह जीवन जीने की कला, नैतिक मूल्यों, आध्यात्मिक चिंतन और सामाजिक उत्तरदायित्व पर आधारित है। भारतीय ज्ञान परंपरा के स्वरूप में गुरु-शिष्य परंपरा, परिवार व्यवस्था, संस्कार और सामूहिक जीवन की अवधारणा प्रमुख रूप से विद्यमान है। इसलिए इस परंपरा में वरिष्ठ नागरिकों को ज्ञान और अनुभव का एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं जीवंत स्रोत माना गया है।

वरिष्ठ नागरिकों की भूमिका

1. सांस्कृतिक मूल्यों के संवाहक

वरिष्ठ नागरिक भारतीय संस्कृति, परंपराओं और संस्कारों को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का कार्य करते हैं। वे परिवार में धार्मिक अनुष्ठानों, लोकाचार और नैतिक मूल्यों का संरक्षण करते हैं।

भारतीय समाज में वरिष्ठ नागरिक किसी परिवार के केवल बड़े-बुजुर्ग सदस्य ही नहीं होते, बल्कि वे भारतीय संस्कृति, भारतीय परंपराओं, नैतिकता और सामाजिक मूल्यों के जीवंत संरक्षक होते हैं। किसी समाज की सांस्कृतिक निरंतरता तभी बनी रह सकती है, जब एक पीढ़ी अपने अनुभव, संस्कार और जीवन-मूल्यों को अगली पीढ़ी तक पहुँचाए। भारत सहित विश्व के अनेक देशों में यह कार्य मुख्य रूप से वरिष्ठ

नागरिकों द्वारा किया जाता है।

सामाजिक जागरूकता के अंतर्गत वरिष्ठ नागरिक नई पीढ़ी को समाज के प्रति उसके उत्तरदायित्व, नैतिक आचरण, सह-अस्तित्व, पारिवारिक एकता और मानवीय मूल्यों की शिक्षा देते हैं। उनके अनुभव समाज में सकारात्मक चेतना के साथ-साथ मानवीय मूल्यों और गरिमा को विकसित करने तथा बनाए रखने में सहायक होते हैं।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं का संरक्षण और ज्ञान वरिष्ठ नागरिक घर-परिवार में संपन्न होने वाले धार्मिक अनुष्ठानों, त्योहारों, रीति-रिवाजों और परंपराओं का ज्ञान बच्चों एवं युवाओं को अपनी परंपरा के अनुसार प्रदान करते हैं। वरिष्ठ नागरिक परिवार के अनुभवी सदस्य होते हैं, जिन्हें जीवन का अनुभव अन्य सदस्यों की तुलना में अधिक होता है। उनका संचित ज्ञान एवं अनुभव नई पीढ़ी के लिए ज्ञान-प्राप्ति और मार्गदर्शन का कार्य करता है।

वरिष्ठ नागरिक होली, दीपावली, रक्षाबंधन, जन्माष्टमी, नवरात्रि और छठ पूजा आदि पर्वों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व से नई पीढ़ी को परिचित कराते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में दादा-दादी बच्चों को रामायण और महाभारत जैसी पौराणिक एवं महत्वपूर्ण कथाएँ सुनाते हैं। वे लोककथाओं के माध्यम से बच्चों को सत्य, त्याग, अहिंसा और नैतिक कर्तव्यों की शिक्षा देते हैं। इससे बच्चों में स्वाभाविक रूप से भारतीय संस्कृति के प्रति आदर एवं सम्मान तथा सामाजिक जिम्मेदारी की

भावना विकसित होती है।

वरिष्ठ नागरिकों द्वारा नैतिक मूल्यों की शिक्षा

वरिष्ठ नागरिकों ने अपने जीवन में जो देखा, सुना, अनुभव किया और अर्जित किया होता है, उसके आधार पर वे युवा पीढ़ी का उचित मार्गदर्शन करते हैं। वे अपने जीवन-अनुभवों के माध्यम से सत्यनिष्ठा, अनुशासन, सहनशीलता, लगन और करुणा जैसे मूल्यों की व्यावहारिक शिक्षा देते हैं।

सामान्यतः युवा पीढ़ी का यह विचार होता है कि वरिष्ठ नागरिक केवल उपदेश देते हैं, जबकि वास्तव में ऐसा नहीं है। वे अपने जीवन के उदाहरणों के माध्यम से सामाजिक आदर्श प्रस्तुत करते हैं। यदि परिवार का कोई युवा सदस्य गलत संगति में पड़कर नशे की ओर आकर्षित हो रहा हो, तो घर के बुजुर्ग अपने ज्ञान, अनुभव और समझदारी से उसे सही मार्ग दिखाने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार वे घर के वातावरण में ही सामाजिक बुराइयों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने का कार्य करते हैं।

सामाजिक समरसता एवं पारिवारिक एकता में वरिष्ठ नागरिकों की भूमिका

वरिष्ठ नागरिक परिवार की धुरी होते हैं। वे परिवार में मध्यस्थ और मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं। वे पीढ़ियों के बीच उत्पन्न होने वाली संवादहीनता को दूर करके परिवार को एकजुट रखने का प्रयास करते हैं। संयुक्त परिवार व्यवस्था में बुजुर्ग व्यक्ति की उपस्थिति सामाजिक

संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

हमारे समाज में ऐसे अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं, जब परिवारों में संपत्ति को लेकर आपसी विवाद की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। ऐसी परिस्थितियों में घर के बुजुर्ग निष्पक्ष निर्णय देकर परिवार को टूटने से बचाते हैं। इससे परिवार के साथ-साथ समाज में सहयोग और सामंजस्य की भावना मजबूत होती है।

लोकज्ञान एवं पारंपरिक ज्ञान का हस्तांतरण

वरिष्ठ नागरिक लोकज्ञान एवं पारंपरिक ज्ञान के हस्तांतरण का एक अच्छा स्रोत होते हैं। वे कृषि, आयुर्वेद, घरेलू नुस्खों एवं उपचारों, लोककला, पारंपरिक जीवन-शैली और स्वस्थ दिनचर्या से संबंधित ज्ञान नई पीढ़ी तक पहुँचाते हैं। उनके द्वारा दिया जाने वाला यह ज्ञान सामाजिक जागरूकता और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देता है।

हमारे देश के ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले वरिष्ठ नागरिक अपने गाँवों में प्रकृति संरक्षण, जल संरक्षण, प्राकृतिक तरीके से खेती तथा औषधीय वनस्पतियों और पौधों के उपयोग का ज्ञान युवाओं को देते हैं। इससे पर्यावरण संरक्षण और स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता को बढ़ावा मिलता है।

सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता

वरिष्ठ नागरिक अपने ज्ञान और अनुभव के आधार पर समाज में बढ़ती नैतिक गिरावट, नशाखोरी और उसकी लत,

पारिवारिक विघटन तथा सामाजिक असमानता जैसे मुद्दों के प्रति युवाओं को जागरूक करते हैं। उनके अनुभव सामाजिक सुधार की दिशा में प्रेरणा और प्रोत्साहन का कार्य करते हैं।

अनेक वरिष्ठ नागरिक अपने खाली समय का उपयोग समाजोपयोगी कार्यों में करते हैं। वे सामाजिक संस्थाओं, वरिष्ठ नागरिक समितियों और धार्मिक संगठनों के माध्यम से विधवा-विवाह, बाल-विवाह, दहेज-प्रथा और नशामुक्ति जैसे विषयों से संबंधित अभियानों में सक्रिय रूप से अपनी भूमिका निभाते हैं।

सामाजिक जागरूकता के कार्यों में वरिष्ठ नागरिकों का महत्त्व

सामाजिक जागरूकता की दिशा में वरिष्ठ नागरिकों द्वारा किए जाने वाले कार्यों में समाज में नैतिक चेतना का विकास करना सर्वोपरि है। इसके साथ ही सांस्कृतिक पहचान का संरक्षण करना और युवा पीढ़ी को सही दिशा प्रदान करना भी उनके योगदान के महत्त्व को दर्शाता है।

सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जागरूकता फैलाना तथा पारिवारिक और सामाजिक संबंधों को मजबूत बनाना भी वरिष्ठ नागरिकों द्वारा किए जाने वाले महत्त्वपूर्ण कार्य हैं।

सामाजिक जागरूकता के परिप्रेक्ष्य में वरिष्ठ नागरिक भारतीय संस्कृति, सामाजिक मूल्यों, सामाजिक चेतना और सामाजिक विकास के प्रमुख संवाहक हैं। उनका जीवन-अनुभव, जीवन-दर्शन तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक ज्ञान समाज को नैतिक और सकारात्मक

दिशा प्रदान करता है।

वर्तमान समय में संयुक्त परिवार व्यवस्था लगभग समाप्ति की ओर है और एकल परिवारों को अधिक पसंद किया जाने लगा है। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि समाज वरिष्ठ नागरिकों के ज्ञान एवं अनुभवों का सम्मान करे तथा नई पीढ़ी को उनके साथ जोड़कर सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से अधिक सुदृढ़ बनाए।

2. नैतिक एवं जीवनोपयोगी शिक्षा

वृद्धजनों का जीवन-अनुभव युवा पीढ़ी को सही दिशा प्रदान करता है। उनके अनुभव संघर्ष, धैर्य और संयम की शिक्षा देते हैं। भारतीय समाज में दादा-दादी एवं नाना-नानी बच्चों के प्रथम नैतिक शिक्षक माने जाते हैं। बच्चा अपनी प्रारंभिक नैतिक शिक्षा अपने दादा-दादी और नाना-नानी से ही प्राप्त करता है।

आधुनिक युग में तेजी से बदलता हुआ समाज युवा पीढ़ी को नई तकनीक और भौतिक जीवन की ओर लेकर जा रहा है। वहीं वरिष्ठ नागरिक नैतिकता, संस्कार और मानवीय जीवन-मूल्यों के मार्गदर्शक के रूप में सामने आते हैं। उनके जीवन-अनुभव, ज्ञान और जीवन-संघर्ष वर्तमान पीढ़ी को सही दिशा प्रदान करते हैं।

ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में प्रायः यह देखा जाता है कि वरिष्ठ नागरिक अपने जीवन-अनुभवों के आधार पर नई पीढ़ी को धैर्य, संयम, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और संघर्ष की शिक्षा देते हैं तथा इन मूल्यों का महत्त्व समझाते हैं। वे शिक्षा देने के साथ-साथ अपने जीवन

के उदाहरणों से प्रेरणा भी प्रदान करते हैं। इसीलिए घर के बुजुर्गों को परिवार की जीवंत पाठशाला कहा जाता है।

संघर्ष और धैर्य की सीख

वरिष्ठ नागरिक अनुभवी होते हैं। उन्होंने अपने जीवन में अनेक प्रकार की कठिन परिस्थितियों का सामना किया होता है। उन्होंने मेहनत और धैर्य के साथ सामाजिक चुनौतियों, आर्थिक अभावों और पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए जीवन को आगे बढ़ाया होता है।

उनका जीवन युवाओं को यह संदेश देता है कि सफलता प्राप्त करने का कोई संक्षिप्त मार्ग नहीं होता, बल्कि सफलता निरंतर प्रयास, धैर्य और संयम से प्राप्त होती है। गाँवों में आज भी दादा-दादी घर के बच्चों को अपने जीवन-संघर्षों की कहानियाँ सुनाते हैं। इससे बच्चों में परिस्थितियों का सामना करने और उनसे बाहर निकलने की भावना प्रबल होती है। इसके साथ ही उनमें मेहनत और आत्मविश्वास की भावना विकसित होती है।

घर के बुजुर्गों से प्राप्त यह शिक्षा पुस्तकीय ज्ञान की तुलना में अधिक प्रभावशाली होती है, क्योंकि इसमें वरिष्ठ नागरिकों का वास्तविक ज्ञान और जीवन-अनुभव सम्मिलित होता है।

नैतिक मूल्यों का विकास

घर के बड़े-बुजुर्ग बच्चों को बड़ों का सम्मान करना, सत्य बोलना, अनुशासन में रहना और दूसरों की सहायता करना जैसे सामाजिक एवं नैतिक मूल्य सिखाते हैं। वर्तमान समय में परिवारों में

आपसी संवाद कम होता जा रहा है। अनेक घरों में परिवार के सदस्य केवल आवश्यकता के अनुसार ही आपस में बातचीत करते हैं।

ऐसी परिस्थितियों में घर के बुजुर्ग बच्चों को बिना किसी अतिरिक्त व्यय या दबाव के भावनात्मक सुरक्षा और संस्कारों की शिक्षा प्रदान करते हैं। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार जिन बच्चों का अपने दादा-दादी से नियमित संवाद होता है, उनमें संवेदनशीलता और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना अन्य बच्चों की तुलना में अधिक विकसित होती है।

सामाजिक जागरूकता में योगदान

अनेक वरिष्ठ नागरिक सामाजिक संस्थाओं, धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों तथा सामुदायिक गतिविधियों के माध्यम से युवाओं को नैतिक और सामाजिक शिक्षा प्रदान करते हैं। वे नशामुक्ति, पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा और सामाजिक सद्भाव के प्रति युवाओं को प्रेरित एवं जागरूक करते हैं।

इस प्रकार वरिष्ठ नागरिक केवल अपने परिवार तक सीमित नहीं रहते, बल्कि समाज में जागरूकता फैलाने का कार्य भी करते हैं। वे समाज में सकारात्मक वातावरण का निर्माण करते हैं। इसके लिए वे युवाओं को आपसी विवादों से बचने, शिक्षा ग्रहण करने और समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं बुराइयों से दूर रहने की सलाह देते हैं।

बदलते समय में चुनौतियाँ

तेजी से विकसित हो रही एकल परिवार व्यवस्था और व्यस्त जीवन-शैली

के कारण अनेक वरिष्ठ नागरिक अपने परिवारों से दूर होते जा रहे हैं। परिवारों में बुजुर्गों की सहभागिता कम या समाप्त होने से नई पीढ़ी उनके अनुभवों और उनसे मिलने वाली नैतिक शिक्षा से वंचित हो रही है। इसके परिणामस्वरूप बच्चों में संस्कारों और सामाजिक चेतना का विकास प्रभावित हो रहा है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि परिवारों में बुजुर्गों की सहभागिता बढ़ाई जाए और उनके अनुभवों को महत्व दिया जाए। इससे बच्चों में संस्कारों और सामाजिक चेतना को मजबूत किया जा सकता है तथा उनके सामाजिक मूल्यों को अधिक सुदृढ़ बनाया जा सकता है।

3. आध्यात्मिक मार्गदर्शन

भारतीय ज्ञान परंपरा में वृद्धावस्था को आत्मचिंतन, साधना और आध्यात्मिक उन्नति का महत्वपूर्ण समय माना गया है। वरिष्ठ नागरिक धार्मिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियों में सक्रिय रहकर अपने अनुभव, धार्मिक आस्था और जीवन-दर्शन के माध्यम से समाज को सकारात्मक दिशा प्रदान करते हैं।

आध्यात्मिक चेतना का विकास और जीवन-मूल्यों की शिक्षा

वरिष्ठ नागरिक ईश्वर में आस्था रखते हुए पूजा-पाठ, सत्संग, भजन और धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से परिवार एवं समाज में आध्यात्मिक वातावरण का निर्माण करते हैं। वे युवाओं को सत्य, अहिंसा, करुणा, धैर्य और संयम के साथ-साथ नैतिक एवं आध्यात्मिक

मूल्यों की शिक्षा देते हैं।

धार्मिक परंपराओं का संरक्षण, मानसिक शांति और सकारात्मकता

वरिष्ठ नागरिक धार्मिक संस्कारों, त्योहारों की परंपराओं और भारतीय संस्कृति को नई पीढ़ी तक पहुँचाते हैं। वे युवाओं को तनाव, क्रोध और निराशा से मुक्त रहते हुए सकारात्मक जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं।

संकट के समय मार्गदर्शन

वरिष्ठ नागरिक संकट के समय उचित मार्गदर्शन देने के साथ-साथ सामाजिक समरसता का संदेश भी देते हैं। वे समाज में प्रेम, सहयोग, भाईचारा और सहिष्णुता की भावना को मजबूत करते हैं। परिवार और समाज में कठिन परिस्थितियाँ उत्पन्न होने पर वे अपने अनुभव और आध्यात्मिक दृष्टिकोण के आधार पर सही मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा के विशेष संदर्भ में संकट के समय वरिष्ठ नागरिकों की मार्गदर्शक भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

भारतीय आश्रम व्यवस्था, सत्संग एवं धार्मिक गतिविधियों का पालन

भारतीय परंपरा के अनुसार वृद्धावस्था को वानप्रस्थ आश्रम का समय माना गया है। इस अवस्था में वृद्ध व्यक्ति सांसारिक मोह से ऊपर उठकर आध्यात्मिक चिंतन की ओर अग्रसर होते हैं।

अनेक वरिष्ठ नागरिक मंदिर, आश्रम, कथा, प्रवचन और सामाजिक कार्यों में सक्रिय सहभागिता के माध्यम से समाज

को नैतिक शिक्षा एवं उचित दिशा प्रदान करते हैं। इस प्रकार भारतीय परंपरा के अनुसार वरिष्ठ नागरिक आध्यात्मिक मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं। उनका संचित अनुभव और ज्ञान समाज में जागरूकता एवं सकारात्मकता स्थापित करने में सहायक होता है।

4. सामाजिक समरसता की स्थापना

वरिष्ठ नागरिक परिवार और समाज में संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे विवादों के समाधान तथा पारिवारिक एवं सामाजिक समन्वय स्थापित करने में सहायक होते हैं। वरिष्ठ नागरिक परिवार के महत्वपूर्ण आधार के रूप में सदस्यों के बीच प्रेम, आपसी सहयोग और अनुशासन बनाए रखने का कार्य करते हैं।

विवादों का शांतिपूर्ण समाधान एवं पीढ़ियों के बीच संवाद की कमी को दूर करना

वरिष्ठ नागरिक अपने अनुभव और निष्पक्ष दृष्टिकोण के आधार पर पारिवारिक एवं सामाजिक विवादों को समझदारी से सुलझाने का प्रयास करते हैं। इसके साथ ही वे नई और पुरानी पीढ़ी के विचारों के बीच तालमेल स्थापित करके आपसी समझ को मजबूत बनाते हैं।

सामाजिक मूल्यों का संरक्षण करते हुए सामाजिक एकता को बढ़ाना

वरिष्ठ नागरिक समाज में नैतिकता, संस्कार, सांस्कृतिक परंपराओं, सहिष्णुता और आपसी सम्मान की

भावना को बनाए रखने में सहायक होते हैं। वे संकट के समय मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हुए सामाजिक मूल्यों का संरक्षण करते हैं।

इसके साथ ही वे घर, परिवार और समाज के कार्यों में स्वयं को सक्रिय रखते हुए सभी को एकजुट रखने का प्रयास करते हैं। वरिष्ठ नागरिक सामाजिक समरसता के प्रमुख आधार-स्तंभ हैं। उनका अनुभव और संयमित व्यवहार समाज में एकता, शांति और सहयोग की भावना को मजबूत करता है। इसलिए वरिष्ठ नागरिकों के अनुभवों और सुझावों का सम्मान किया जाना चाहिए।

5. पारिवारिक संरचना को सुदृढ़ करना

भारतीय समाज में संयुक्त परिवार प्रणाली वर्षों से चली आ रही है। इस व्यवस्था में वरिष्ठ नागरिक परिवार के प्रमुख मार्गदर्शक, निर्णयकर्ता और संरक्षक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। उनके अनुभव के कारण परिवार में अनुशासन और एकता बनी रहती थी।

संस्कारों का हस्तांतरण

वरिष्ठ नागरिक भावी पीढ़ी को भारतीय परंपराओं, भारतीय संस्कृति और नैतिक मूल्यों की शिक्षा देकर परिवार की सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखते हैं। इस प्रकार वे घर के सदस्यों के बीच आपसी प्रेम, सहयोग और समझ बनाए रखते हुए परिवार के सभी सदस्यों को एकजुट रखने का कार्य करते हैं।

भावनात्मक सुरक्षा और बच्चों के प्रथम

शिक्षक

घर के बड़े-बुजुर्ग बच्चों को नैतिक शिक्षा, जीवन-मूल्य और व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करते हैं। इसके साथ ही वे परिवार के सदस्यों को अपनापन, प्रेम, स्नेह और मानसिक सहयोग देते हैं। उनके ऐसा करने से परिवार के सदस्यों के बीच आत्मीयता बनी रहती है।

वरिष्ठ नागरिकों का अनुभव, मार्गदर्शन और जीवन-दृष्टि परिवार में अनुशासन, एकता और सांस्कृतिक मूल्यों को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसीलिए भारतीय ज्ञान परंपरा के विशेष संदर्भ में यह कहना उचित है कि वरिष्ठ नागरिक पारिवारिक संरचना के प्रमुख आधार-स्तंभ हैं।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में चुनौतियाँ

आधुनिक समाज में तेजी से बढ़ते नगरीकरण, औद्योगीकरण, एकल परिवार व्यवस्था और संपूर्ण विश्व के एक वैश्विक गाँव में परिवर्तित होने के कारण वरिष्ठ नागरिकों की स्थिति में व्यापक परिवर्तन आया है। अनेक वृद्धजन अकेलेपन, उपेक्षा और आर्थिक असुरक्षा का सामना कर रहे हैं। तकनीकी परिवर्तनों के कारण पीढ़ियों के बीच संवाद का अंतर भी बढ़ा है।

पहले संयुक्त परिवार हुआ करते थे, जहाँ वरिष्ठ नागरिकों को उचित सम्मान, सुरक्षा और निर्णयकर्ता की महत्वपूर्ण भूमिका प्राप्त थी। वहीं आज अधिकांश वरिष्ठ नागरिक अकेलेपन और उपेक्षा का अनुभव कर रहे हैं।

अनेक परिवारों के युवा सदस्यों को नौकरी, रोजगार, व्यवसाय या काम-धंधे

की तलाश में पलायन करना पड़ता है। इससे भी परिवारों में दूरियाँ बढ़ी हैं। वृद्धजनों में आर्थिक असुरक्षा, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ तथा भावनात्मक सहयोग का कम या बिल्कुल न मिलना एक बड़ी चुनौती बन गया है।

तकनीकी विकास और आधुनिक जीवन-शैली के कारण नई और पुरानी पीढ़ी के बीच संवाद का अंतर बढ़ता जा रहा है। अनेक वरिष्ठ नागरिक आधुनिक तकनीक के साथ स्वयं को सहज अनुभव नहीं करते, जिसके कारण वे स्वयं को समाज की डिजिटल धारा से अलग-थलग अनुभव करते हैं।

बदलती हुई सामाजिक संरचना के कारण पारिवारिक संबंधों में आत्मीयता का अभाव उत्पन्न हुआ है और वरिष्ठ नागरिकों की सहभागिता भी कम हुई है। ऐसी स्थिति में वरिष्ठ नागरिकों के सम्मान, सुरक्षा और सामाजिक सहभागिता को प्रत्येक स्तर पर सुनिश्चित करना आवश्यक है।

भारतीय ज्ञान परंपरा और समाधान

भारतीय ज्ञान परंपरा वरिष्ठ नागरिकों के सम्मान, संरक्षण और सामाजिक सहभागिता को अत्यंत महत्वपूर्ण मानती है। परिवार और समाज को पुनः उन मूल्यों को अपनाने की आवश्यकता है, जिनमें वृद्धजनों को आदर, सुरक्षा और सहभागिता प्राप्त हो।

संयुक्त परिवार की भावना को मजबूत बनाकर वृद्धजनों को परिवार से जोड़कर रखना आवश्यक है। पीढ़ियों के बीच संवाद स्थापित करने से दोनों पक्षों के अनुभवों और संस्कारों का

आदान-प्रदान संभव होता है।

वृद्धजनों के अनुभवों और सामाजिक ज्ञान का उपयोग सामाजिक एवं पारिवारिक विकास में किया जाना चाहिए। इसके साथ ही नैतिक शिक्षा में भारतीय मूल्यों को सम्मिलित करते हुए नई पीढ़ी में सम्मान, संवेदनशीलता और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित की जा सकती है। यह समाज में समरसता और सांस्कृतिक संतुलन बनाए रखने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा में वरिष्ठ नागरिकों को समाज की अमूल्य धरोहर माना गया है। उनका अनुभव, ज्ञान और जीवन-दृष्टि समाज को नैतिक, सहयोगात्मक एवं सांस्कृतिक दिशा प्रदान करते हैं।

वर्तमान समय में आवश्यकता है कि भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को पुनर्जीवित करते हुए वरिष्ठ नागरिकों के सम्मान, सुरक्षा और सक्रिय सहभागिता को सुनिश्चित किया जाए। इससे न केवल परिवार सुदृढ़ होगा, बल्कि समाज में नैतिकता, संस्कार और सांस्कृतिक चेतना भी बनी रहेगी।

संदर्भ सूची

1. ऋग्वेद, मंडल 10, सूक्त 191, पृष्ठ 245।
2. ईशावास्य उपनिषद, पृष्ठ 52।
3. मनुस्मृति, अध्याय 2, श्लोक 121-125, पृष्ठ 87।
4. वाल्मीकि, *रामायण*, अयोध्याकांड,

गीता प्रेस, गोरखपुर, पृष्ठ 312।

5. वेदव्यास, *महाभारत*, शांतिपर्व, गीता प्रेस, गोरखपुर, पृष्ठ 458।
6. रामधारी सिंह दिनकर, *भारतीय संस्कृति और समाज*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 176।
7. वृद्धावस्था और समाज*, सामाजिक अध्ययन प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 94।
8. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, *भारतीय दर्शन*, राजपाल एंड संस, नई दिल्ली, पृष्ठ 221।